9

मीकल

जब प्रेम कड़वाहट में बदल जाता है!
(18:20, 27; 19:11-17)

पहला शमूएल में मानवीय जीवन के लगभग सभी अनुभवों को छुआ गया है। इस पुस्तक में एक ''प्रेम प्रकरण'' है। इस प्रेम कहानी में इतना मसाला है कि वह आज के बाज़ार की सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक बन सकती है। कहानी में दो जवान प्रेमी हैं, कई उलझनें, साज़िश, भावनात्मक उतार-चढ़ाव, खतरे आदि मिलते हैं। यह एक रोमांचक कहानी है। परन्तु इस प्रेम कहानी के अंत में पर्दा गिरने के समय ''बाद में खुशी खुशी रहने'' की बात नहीं मिलती। इस कहानी का ऐसा सुखद अंत सज़्भव हो सकता था, परन्तु ''प्रेम'' को उसकी सही जगह नहीं मिल पाई, और उसकी जगह कड़वाहट को राज करने दिया गया।

वैवाहिक आकर्षण की दुखद वास्तविकता बहुत से दज़्पज़ियों के जीवन में अप्रसन्नता से आ जाती है। बहुत बार खुशहाल परिवार भी एक कड़वे या घृणात्मक युद्ध क्षेत्र में बदल जाता है। सुकरात की पत्नी ज़न्टिप्पे बहुत अधिक क्रोध करने वाली स्त्री थी। एक बार, अपने ऊपर उसका पूरा क्रोध उतारने के बाद सुकरात बाहर जाकर सामने वाली सीढ़ि पर बैठ गया, उसका शांत और लापरवाह व्यवहार देखकर वह और चिढ़ गई। क्रोधित होकर वह सीढ़ियों पर गई और सुकरात के सिर पर पानी का एक घड़ा उंडेल दिया। सुकरात ने हंसकर केवल इतना कहा कि इतने बादल से तो बारिश ही हो सकती थी!

दो जवान प्रेमी, यिशै का पुत्र दाऊद और शाऊल की बेटी मीकल एक अप्रिय सबक सिखाते हैं जिस पर हम सब को ध्यान देने की आवश्यकता है।

विवाह

उन दोनों की मुलाकात गोलियत के मारने के थोड़ी देर बाद हुई थी। उस दानव को मारने के पुरस्कार के रूप में शाऊल ने दाऊद का विवाह अपनी बेटी मेरब से करने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु शाऊल का द्वेष, भय तथा अन्य जटिल बुराइयों के कारण वह अपनी प्रतिज्ञा से मुकर गया और मेरब का विवाह किसी ओर के साथ कर दिया गया था। जब शाऊल को पता चला कि उसकी छोटी बेटी सचमुच दाऊद से प्रेम करती है तो उसने इसे दाऊद को मारने के अवसर के रूप में एक मौका समझा (18:20-25)। दाऊद मीकल को

अपनी पत्नी बनाने के लिए कुछ भी करने को तैयार था (18:27)। उसने वीरतापूर्वक उस पर अपना दावा कर दिया और दोनों के बारे में इस्राएल में यह बात फैल गई कि यह ''स्वर्ग में हुआ विवाह'' है!

उनके प्रेम का प्रमाण दाऊद के सताव के लिए शाऊल को दिए गए जवाब से मिलता है (19:11-17)। शाऊल की हिंसा ने विवेक की सारी सीमाएं तोड़ डाली थीं, और राजा ने अंततः दाऊद को दोषी ठहराकर सरकारी तौर पर उसकी हत्या की योजना बनाई थी। निजी तौर पर दाऊद को न मार सकने पर (18:10), शाऊल ने दाऊद को मारने के लिए जाल बिछाया। मीकल को अपने पिता के षड्यन्त्र का पता चल गया और उसने अपनी मूर्ति को ढककर और यह कहकर कि यह बिस्तर पर पड़ा बीमार दाऊद ही है शाऊल से बचने में उसकी सहायता की थी। अपनी चालाकी का भेद खुलने के बाद, उसने अपने बचाव के लिए शाऊल से झूठ बोला। दाऊद ने इस बचाव का एक विवरण लिखा जो भजन संहिता 59 में मिलता है। यहीं से दाऊद का बनवास शुरू हुआ था। मीकल को दाऊद से छीनकर किसी और की पत्नी होने के लिए दे दिया गया (2 शमूएल 3:13-16)। आठ साल तक ये प्रेमी अलग रहे।

दाऊद और मीकल का पुनर्मिलन शाऊल की मृत्यु के बाद हुआ। यह पुनर्मिलन उस कड़वाहट को सामने लाता है जिसके कारण वे फिर से अलग हो गए। शाऊल की मृत्यु के बाद, उसका सिंहासन उसके जीवित पुत्र को सौंपा गया परन्तु उसके राज में शाऊल जितनी एकता तथा निष्ठा नहीं थी (2 शमूएल 3:1)। बाद में बातचीत करके झगड़ने वाले दोनों गुटों को मिलाया गया (2 शमूएल 2:12से)।

दाऊद की पहली शर्त यह थी कि मीकल तुरन्त उसके पास लौट आए। दाऊद ने कहा, ''मैं तेरे साथ वाचा तो बांधूंगा; परन्तु एक बात मैं तुझ से चाहता हूं; कि जब तू मुझ से भेंट करने आए, तब यदि तू पहले ... मीकल को न ले आए, तो मुझ से भेंट न होगी'' (2 शमूएल 3:13)। इसमें कोई शक नहीं कि अपने ''पहले प्रेम'' की यादें उसके मन में थीं। इस पुनर्मिलन से दाऊद की गद्दी भी वापस मिल जानी थी ज़्योंकि उसकी पत्नी राजा की बेटी थी। हेब्रोन में बहुत देर से अनुमानित पुनर्मिलन दस साल की जुदाई के बाद हुआ। ज़्या आप मीकल की प्रतीक्षा करते हुए दाऊद के दिल की धड़कनों और उसकी घबराहट को महसूस कर सकते हैं? वह अपने पहले प्रेम से अर्थात उस औरत से मिलने वाला था जिसने अपनी जान जोखिम में डालकर उसकी रक्षा की थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह जल्दी से जल्दी उससे फिर मिलना चाहता था! परन्तु अब परिस्थिति बदल चुकी थी।

दस साल पहले छोटे-छोटे लगने वाले मतभेद अब बढ़ चुके थे। दाऊद और मीकल तो वही थे परन्तु उनके मूल्य बदल चुके थे। यह अन्तर अपने विवाह की योजना बनाने तथा पहले कुछ महीने इकट्ठे रहने के समय इतने महत्वपूर्ण नहीं लगते थे। परन्तु ये अन्तर बढ़कर इतने बड़े हो चुके थे कि इस्राएल के इतिहास में पर्व के एक दिन आखिर फूट ही निकले। उनमें कोमल प्रेम मर चुका था, और कड़वाहट ने जन्म ले लिया था। ''स्वर्ग में हुए इस विवाह'' का अंतिम हवाला इस दुख को याद कराता है (2 शमूएल 6:23)।

त्रासदी

मीकल के जीवन से हम देखते हैं कि एक गलती ही उनके प्रेम को तोड़ने के लिए दोषी थी। याद रखें कि शैतान को केवल एक ही गलती की आवश्यकता होती है, और उसी का इस्तेमाल करके वह एक दरार बना देगा जो विनाशकारी प्रलय के लिए काफी होती है (याकूब 2:10)।

मीकल की वह गलती यह थी कि *उसने परमेश्वर को उसके योग्य आदर नहीं दिया था!* उसकी इच्छा पवित्रता के लिए न होकर प्रतिष्ठा के लिए, सच्ची आराधना के लिए न होकर मूर्तिपूजा के लिए थी। उसका पालन-पोषण शाऊल की देखरेख में हुआ था। उस युग में लोग परमेश्वर की परवाह नहीं करते थे (1 इतिहास 13:3)। सार्वजनिक आराधना पर ध्यान नहीं दिया जाता था और धार्मिक जोश ठण्डा था। मीकल को परमेश्वर का ज्ञान था, परन्तु वह सचमुच में परमेश्वर को नहीं ''जानती'' थी! वह परमेश्वर को ''गृह देवता'' के बराबर का दर्जा देती थी (19:16)। उसके धर्म को अंधविश्वास, औपचारिकता तथा नीरसता कहा जा सकता है। बड़ी होकर, वह दाऊद की भक्ति को सहन नहीं कर सकती थी! दाऊद से उसका प्रेम केवल उसके नायकत्व तथा राजा होने के कारण था। वह यहोवा की परवाह नहीं करती थी और इसी कारण यहोवा के सामने साधारण इस्राएलियों के साथ अपने आप को बराबर रखने के कारण उसकी दीनता और भक्तिपूर्ण जोश को तुच्छ जाना था (2 शमूएल 6:20)।

उसकी एक गलती से उसका प्रेम कड़वाहट में बदल गया और आज वैवाहिक सम्बन्धों में क्लेश और कड़वाहट के लिए अधिकतर यही बात ज़िम्मेदार है! उन घरों में जहां आनन्द होना चाहिए, बहुत से लोग मुकदमों में फंसे हुए हैं क्योंकि पति या पत्नी में एक परमेश्वर को दूसरे से अधिक प्रेम करता है। ऐसे परिवारों में दुख की एक और बात यह पता चलना है कि दो लोगों ने अपने आप को एक दूसरे से प्रेम करने के लिए गिरवी रखा हुआ है, जबकि वे एक अनन्त अलगाव की ओर बढ़ रहे हैं! परमेश्वर के लिए दृढ़ विश्वास तथा प्रेम के साथ वैवाहिक जीवन शुरू करने वाले बहुत से दम्पति धीरे धीरे एक ऐसे विश्वास में जकड़े जाते हैं जिसे ''शांति'' माना जाता है, परन्तु अंत में वह बहुत पीड़ा होती है!

जीवन भर के लिए दो आत्माओं के मिलन का अटल कदम उठाने से पहले गंभीरतापूर्वक इस पर विचार करना आवश्यक है।

परिणाम

धार्मिक तौर पर विभाजित घर की त्रासदी के बारे में बताने के लिए यह कहानी विशेष है। वैवाहिक बंधन विभाजित होने तथा पति-पत्नी के बीच की खाई बढ़ जाने और उसके बढ़े रहने के विशेष परिणामों को ध्यान में रखें।

एक घमण्डी और अहंकारी मन दिखाई देगा। मीकल शाही ठाठबाठ वाला जीवन चाहती थी; वह ''साधारण लोगों'' के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहती थी। यह दिखाता है कि जीवन मूल्यों के लिए हमारे निर्णयों का हमारे विश्वास से काफ़ी सम्बन्ध होता

है। विश्वास की बातों पर जब दोनों एक दूसरे से असहमत होंगे तो वे जीवन मूल्यों पर भी असहमत होंगे। दाऊद के समर्पण से मीकल की शाही शान पर असर पड़ा था ज़्योंकि वह आम लोगों से घुल-मिल गया था। मीकल ने अपने आप को ''शाऊल की पुत्री'' के रूप में देखा और उसके मूल्य उसी पर आधारित थे।

ऐसी स्थिति में ताने और काट खाने वाली भाषा एक दूसरे के लिए इस्तेमाल होगी। दाऊद के जीवन में पर्व का दिन सबसे खुशी का दिन था। वह अपने घर ''आशीष'' देने के लिए गया था (6:20)। वह आया आनन्दमय दावत पाने की उम्मीद से था, परन्तु चला सीधा ''भिर्र के छज्ञे में'' गया! उसका स्वागत मज़ाक और ठट्ठे भरे अभिवादन से हुआ। मीकल बहुत चिढ़ी हुई थी और उसने कहा, ''आज इस्राएल का राजा जब अपना शरीर अपने कर्मचारियों की लौंडियों के सामने ऐसा उघाड़े हुए था जैसा कोई निकज़्मा अपना तन उघाड़े रहता है, तब ज़्या ही प्रतापी देख पड़ता था!'' (2 शमूएल 6:20)। इब्रानी में ''निकज़्मा'' किसी का अपमान करने के लिए सबसे कठोर शज़्द है। वह उसे ''खाली दिमाग वाला मूर्ख''! (तु. मज़्मी 5:22।) कह रही थी। शायद इसी से दाऊद को भजन 52:2, 57:4 या 120:3 लिखने की प्रेरणा मिली थी। मीकल ने दाऊद पर ''उघाड़े'' अर्थात नंगा होने का आरोप लगाया था, जबकि उसने एक साधारण नागरिक की तरह केवल अपने शाही वस्त्र ही उतारे थे। पति-पत्नी के बीच ताने और चुभने वाली बातों का यह दृश्य दाऊद और मीकल की तरह बहुत से दज़्पज़ियों में सामान्य है।

समझ की कमी, नाराजगी और अंत में अलग होना ही होगा। दाऊद की तरह परमेश्वर से प्रेम न कर पाने के कारण मीकल को आराधना में आने वाले जोश का ज्ञान नहीं था। उसने उसे ''तुच्छ जाना'' (6:16), जिससे उसकी घृणा का पता चलता था। बहुत से मसीही लोग ऐसे हैं जिनका पति या पत्नी द्वारा आत्मिक तौर पर हौसला तोड़ा जाता है। विवाह के लिए विश्वास में भिन्नता एक ऐसी रुकावट है जिसे दूर किया जाना आवश्यक है। सामान्यतया परमेश्वर के साथ समझौते और जीवन साथी से सुलह के समझौते या परमेश्वर से सुलह और जीवन साथी से अलगाव ऐसी में से एक को ही चुनना चाहिए।

निष्कर्ष यह है कि दाऊद और मीकल की तरह बहुत से पति-पत्नियों में खाई और घाव इतने बड़े हो जाते हैं कि चंगाई नहीं मिल पाती। जिसका परिणाम अलग होना रहता है।

सारांश

इस कहानी का अंत कितना सुखद होता यदि मीकल के लिए केवल इतना ही लिखा होता कि वह ''परमेश्वर के मन के अनुसार'' एक स्त्री थी। वह और दाऊद पति-पत्नी के रूप में नहीं रहे, और सज़्भवत: मन मुटाव और अधिक गहरा गया (2 शमूएल 6:23)। 2 शमूएल 21:8 में उसके पांच पुत्र होने की बात मिलती है, परन्तु उनके मीकल के नहीं बल्कि मेरब के होने की अधिक सज़्भावना है। स्पष्टतया, मीकल ने अपनी बहन के लड़कों को पाला था।

इस मर्मस्पर्शी प्रेम कहानी का कितना दुखद अंत होता है। यह सोचना कि बहुत से लोग आज इसी राह चल रहे हैं, कितना बुरा लगता है!

इस प्रेम कहानी का अंत विनाश में हुआ ज़्योंकि दो लोगों ने विश्वास की समानता के अभाव में इकट्ठे रहने का प्रयास किया था। उनके विवाह के लिए यह शज़्द काफी हैं: कठोर, स्वार्थी, घमण्डी, तेज़ ज़ुबान, ताने मारने वाला, क्रोधी, और असहनशील।

परमेश्वर की पवित्र पुस्तक के प्रत्येक छात्र को गंभीरतापूर्वक देखना चाहिए कि परिवार के विश्वास का एक होना कितना आवश्यक है। हमें अपने जवानों से केवल मसीही जीवन साथी चुनकर विवाह करने का आग्रह करना चाहिए और सज़्भव हो तो दाऊद और मीकल के जीवन की कड़वाहट को अपने से दूर रखना चाहिए! अपने जवानों में इस अहसास को बिठा दें कि यह त्रासदी उनके घरों में न दोहराई जाए।